

श्रीगोश्वामः

श्रीयोगचित्रामणिः ॥

रा.

जा. वि.

शोते लक्ष गला कलश्री लम्बा दरा नमस्कार याङ्ग गायं लधालया अनेक विग्रहाङ्ग वषोया दो फुट के गुठा तअ
प्रितो भे प्रकाश गुया व विज्या कल भक्त जन पानि सया चित्त लया गु कार्य स चिंता मणि भे मुन्दर मोर्त वस्त्रा वजा कल
ब्रह्मा विष्णु मेहश्वा न मान्य याङ्ग वत वल म हा वोर ह्य या तन मस्कार याङ्ग योगा वेत्ता मणि प्रकाश या गते ना मश

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ योगा चिंता मणी ॥ ॥ गुह्य गणपति विष्णु न त्वाने धाले भा

मया ॥ योग शास्त्रा न्ममालोका वक्ष्ये हं योग संग्रहः ॥ १ ॥ विधौ यद्वलान लसति श

श्री पार्वती नमः ॥ या के विन तो यात हे इस्वर योग भाषा गुह्य योगा भास गेटे चो ना योगे ह्य सिद्धि यिव योग गुले
द्वयं समस्त आजा दये कस्य विज्या यमाल धका यिना पयात ॥ २ ॥ हे पारवती प्राणा वायु अयाता वायु नील
संयोग गुह्य गुयात योग भाषा ॥ क्व विदुः संयोग जूलमान यो जीवान्मा परमात्मा समान नूलमान यो जायध

म.